CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकालोक

B-1

वार्षिक
मूल्य १५

एक प्रति
१-५०
न० पैसे

प्रकाशक - माधव पुस्तकालय
१०३ ए, कमलानगर, देहली

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

भारतीय संस्कृति के अग्रदूत

'लोकालोक' के उद्देश्य तथा नियम

उद्देश्य—अनादि अनन्त, सनातन धर्म के सार्वकालिक, सार्वजनीन, प्राणिमात्र के हितकारक सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार।

नियम—(१) लोकालोक का नवीन वर्ष नवसंवत्सरारम्भ (चैत्र) से प्रारम्भ होकर फाल्गुन पूर्णिमा पर्यन्त रहता है।

(२) प्रतिमास अंग्रेजी मास की दस तारीख को अंक भेजा जाता है।

(३) यदि मास की २५ तारीख तक भी अंक न मिले तो अपने पोस्ट पोस्ट आफिस में जानकरी करके कार्यालय को तुरन्त सूचना दी जाय, जिससे अङ्क पुनः भेजा सके।

(४) दो रुपये का डाक टिकट भेजने पर नमूने की प्रति भेजी जा सकती है।

(५) वी पी भेजने का नियम नहीं है। प्रायः अग्रिम वार्षिक मूल्य प्राप्त होने पर ही ग्राहक बनाये जाते हैं।

(६) पत्र का वार्षिक मूल्य देश में १५) विदेश में समुद्री डाक से ६०) तथा वायुयान से भेजने पर १००) है। आजीवन सदस्यता शुल्य भारत में २५१) है।

(७) प्रकाशित रचनाओं पर पारिश्रमिक की व्यवस्था नहीं है। रचनाओं-में अपेक्षित संशोधन का अधिकार सम्पादक को होगा। प्रकाशित मत के लिये लेखक ही उत्तरदायी होगा।

(८) पत्र के कम से कम दस साधारण सदस्य बनाने वाले महानुभावों को एक वर्ष पर्यन्त पत्र निःशुल्क भेजा जाता है।

सदस्यता के प्रकार तथा नियम

१ पन्द्रह रुपये प्रदान करने वाले उस वर्ष के 'साधारण सदस्य' होंगे।

२. इक्यावन रुपये प्रदान करने वाले उस वर्ष के 'विशिष्ट सदस्य' होंगे।

३. दो सौ इक्यावन रुपये प्रदान करने वाले 'आजीवन सदस्य' होंगे।

४. पांच सौ रुपये प्रदान करने वाले 'विशिष्ट सहयोगी सदस्य' होंगे।

५. ग्यारह सौ रुपये प्रदान करने वाले 'संरक्षक सदस्य' होंगे।

विशेष—प्रधान संरक्षक का पद पत्र का सम्पूर्ण भार वहन करने वाले महानुभावों, वीत राग तपस्विवों तथा उच्चकोटि के तत्त्वदर्शी विद्वानों एवं सन्तों के लिये सुरक्षित हैं।

पत्र व्यवहार का एकमात्र पता—

'लोकालोक' (मासिक), माधव पुस्तकालय १०३-ए, कमला नगर
दिल्ली-११०००७

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्रीहरिः ॥

लोकालोक

[संस्थापक—शास्त्रार्थमहारथी श्री पं० माधवाचार्य जी शास्त्री]

लोकानालोकयन् दीप्त्या द्विजान् कुर्वन् वितन्द्रितान् ।
लोकालोकोऽयमुदितो दिवान्धान् धर्षयन् रुचा ॥

दूरभाष : २५२४३२५

वर्ष २४] कमलानगर-दिल्ली, वैशाख : २०४१ [अंक २

❀ वेदामृत

मंगल हमें प्रदान करें

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥

(ऋग्वेद १।८९।४)

भावानुवादः

तापत्रय का शमन नमन जिसको करने से हो जाता,
कोटि-कोटि ब्रह्माण्डों का जो एकमात्र है सन्धाता ।
अतल-वितल-पाताल-सुतल में कीर्ति कौमुदी छाई है,
वेद, उपनिषद् ब्राह्मणादि ने जिसकी महिमा गाई है ।
स्थावर जंगम निखिल विश्व का सर्जक, पालक संहारक,
जन-जन को सद्बुद्धि प्रदायी प्राणिमात्र का उपकारक ।
पोषणकर्ता ईश हमारे धन-जन-बल को पुष्ट करें,
विघ्न निहन्ता हर्षान्वित हो विविध भांति के कष्ट हरे ।
मङ्गल हमें प्रदान करे वह विश्वेश्वर अविनाशी,
हे अदम्य ! दे, शत्रुदमन हित बल पौरुष की राशी ।
सर्व शक्तियों के अधीश को बारम्बार प्रणाम-प्रणाम,
करें सुरक्षा राष्ट्र जाति की भुवनेश्वर वह शोभाधाम ॥

—डा० वीराचार्य शास्त्री

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्रीहरिः ॥ दूरभाष : २५२४३२५

लोकालोक

संस्थापक—शास्त्रार्थमहारथी श्री पं० माधवाचार्य शास्त्री

संरक्षक :—आचार्य श्रीकण्ठ शास्त्री (आद्य सम्पादक)

० मई १९८४ ०

सम्पादक :—	प्रकाशन सहयोगी :	सह सम्पादक :
वीराचार्य शास्त्री	सतीश कौशिक	प्रेमाचार्य शास्त्री
व्यवस्थापक :	राजेश, शैलेश	सह प्रबन्धक
अरुणेश कौशिक	प्रचार : हरीश शास्त्री	लोकेशाचार्य

विषय सूची

लेख	लेखक	पृष्ठ
वेदामृत (कविता)	डा. वीराचार्य शास्त्री	१
सम्पादकीय	डा. वीराचार्य शास्त्री	३
ज्ञान दीप थे (कविता)	,,	५
क्यों (पूर्वार्द्ध)	श्री शास्त्रार्थ महारथी जी	६
माधवो माधवाचार्यः	श्री रामचन्द्र जी शास्त्री रामायणी	
सादगी के प्रतीक	श्री पं. सुरेश जी शर्मा रामायणी	
डायरी का पृष्ठ	श्री अरुणेश जी कौशिक	
बहुमुखी प्रतिभा के धनी	डा. भीष्म दत्त जी शर्मा	
कैकेयी का अन्तर्द्वन्द्व (कविता)	श्री पं० सुरेश जी शर्मा रामायणी	
महासरस्वती	डा. भीष्म दत्त जी शर्मा	
क्रिया शक्ति	डा. उमाकान्त केशव जी आप्टे	
नल दमयन्ती (कविता)	श्री शिवनारायण जी सक्सैना	२
नक्षत्र कहते हैं	डा. केदार नाथ जी जगता	
नागार्जुन कोण्डा	डा. वेदप्रकाश जी शास्त्री	२
शरीर तत्त्व विवेचन	श्री पं. रामस्वरूप जी शास्त्री	३०
सरिता के कुतर्कों का उत्तर	श्री रामचन्द्र जी शास्त्री रामायणी	३१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

****
* सम्पादकीय *
****

धर्म-दीप : श्री शास्त्रार्थ महारथी जी

प्रेरणा के अजस्र स्रोत आचार्य प्रवर (वैकुण्ठवासी पूज्य पितृ चरण शास्त्रार्थ महारथी श्री पं. माधवाचार्य जी शास्त्री) को पावन जयन्ती के अवसर पर अहर्निश धर्म सेवा परायणता की उदात्त भावना स्वाभाविक रूप से हृदय की गहराइयों तक बद्धमूल हो जाती है। विगत पूरे एक वर्ष का लेखा जोखा करने पर "क्या खोया क्या पाया" की गणितीय तुला पर स्वार्थ के बटखरों से तोलने पर तो यह प्रतीत होता है कि लगातार खोते चले जा रहे हैं। जिस 'लोकालोक' की स्थापना भविष्य की स्वर्णिम कल्पनाओं के रूप में की गई थी—जो आज भी अपने क्षेत्र में अपने ढंग का एक मात्र पत्र है—इसके तथाकथित हितचिन्तकों एवं पक्षधरों की बेरुखी की खाई विस्तृत होती जा रही है—परिणाम-स्वरूप दायित्व बोध की नैतिकता शून्यता की ओर बढ़ रही है। जयन्ती हर्षोल्लास का पर्व होता है, परन्तु मूल्याङ्कन उस उल्लास को बढ़ाता है, घटाता नहीं। आज जिस परिस्थिति में हमें कार्य करना पड़ रहा है—उसका संकेत इसी रूप में किया जा सकता है—

है मुमकिन दुश्मनों की दुश्मनी पर सब्र कर लेना।
मगर ये दोस्तों की बेरुखी देखी नहीं जाती॥

अर्थोपासना बुरी चीज नहीं है। चार पदार्थों में अर्थ भी एक पदार्थ है, किन्तु अर्थ के लिये - अनर्थों की लम्बी शृंखला व्यक्ति को दीवानगी तक पहुँचा दे, पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक कर्त्तव्याकर्त्तव्य की जागरूकता को विस्मृति के गहन अन्धकार में बलात् ढकेल दे तो यह विद्रूपता का रूप धारण कर लेती है। आज तो जिधर भी दृष्टिपात करते हैं --

कोई पैसे का दीवाना कोई मतलब का दीवाना।
ये दुनियां सिर्फ दीवानों का घर मालूम होती है॥

'लोकालोक' के निकटतम अपने कहे जाने वाले भी इसके लिये शून्य प्रायः हो चुके हैं। ऐसे में उन महामहिम की जयन्ती के अवसर पर ये पंक्तियां स्मृति पटल पर कौन्ध जाती हैं—

(क) अंगणवेदी वसुधा कुल्या जलधिः स्थली च पातालम्।
वल्मीकश्च सुमेरुः कृतप्रतिज्ञस्य वीरस्य॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ख) कोई बिजलियों से कहदे मेरा आशियां तो लूटा,
मेरे हौंसले को फूंको मेरे अज्म को जलाओ।
मेरी जिन्दगी यही है कि सभी को फैज पहुँचे,
मैं चराग रह गुजर हूँ मुझे शौक से जलाओ॥

हमने संकल्प की दृढ़ता का पाठ शैशवावस्था में ही उनसे पढ़ा है। मात्र आठ वर्ष की आयु में ही हमें जो सैंकड़ों श्लोक उन्होंने कण्ठस्थ कराये—भर्तृहरि का निम्नांकित श्लोक आज भी यथावत् स्मरण है—

निन्दन्तु नीतिनिपुण यदि वा स्तुवन्तु, लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा, न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥

अर्थात्—तथाकथित नीतिकुशल व्यक्ति निन्दा करें या स्तुति, सम्पति आये या जाये किन्तु धीर जन न्याय संगत मार्ग से चरण पीछे नहीं हटाते।

कितनी विडम्बना की बात है कि सनातनधर्म विरोधियों की अटपटी बातों का युक्तियुक्त उत्तर देने वाला तथा कर्म भक्ति ज्ञान की त्रिवेणी का अनुपम संगम यह पत्र अभी भी क्षतिपूर्ति की अपेक्षा हर मास रखता है। सैंकड़ों सनातनधर्म सभाएँ राजधानी दिल्ली में है, सहस्रों मानस मण्डलों तथा सभाओं का जाल भारत में फैला है, लाखों रुपया वर्ष में व्यय करने वाली सभाएँ भी धर्म प्रचार के इस निर्भीक माध्यम को स्वावलम्बी बनने में योगदान नहीं कर पा रही हैं। धनीमानियों ने भी धार्मिक साहित्य के प्रचार को अभी शायद पुण्यकोटि में परिगणित नहीं किया। अन्यथा अब तक 'लोकालोक' और भी अधिक विशाल आकार प्रकार के साथ पाठकों तक पहुँचता।

पूज्य आचार्य चरण धर्म-दीप थे। वे आलोक की रश्मि आजीवन बिखेरते रहे। न जाने कितनी बार उन्होंने चेतावनी दी कि आज प्रचार के युग में हिन्दू जाति को लोभी वृत्ति का परित्याग करके धर्म प्रचारक परक साहित्य के प्रकाशन एवं वितरण पर ध्यान देना चाहिए। उनके अपने सत्संकल्प का ही परिणाम है कि अब भारत के प्रायः सभी प्रान्तों में, सुन्दूर मारीशस फीजी, दक्षिण अमेरिका, हालण्ड, सूरिनाम, पाकिस्तान आदि विदेशों में भी 'लोकालोक' जा रहा है।

अन्त में हम पुण्यश्लोक महारथी जी के सभी सुपरिचितों, भक्तों तथा शिष्यों से आत्मीयतापूर्ण आग्रह करते हैं कि वे इस मासिक पत्र के स्थायित्व में यथा शक्ति योगदान कर 'जयन्तो' को सार्थकता प्रदान करेंगे। मङ्गलमस्तु।**

—डा. वीराचार्य शास्त्री

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(पूज्य पितृ चरणों की जयन्ती के अवसर पर)

ज्ञान-दीप थे.....

—डा. वीराचार्य शास्त्री

आज जयन्ती का उत्सव फिर से आया है,
आओ मिल कर हर्ष मनायें ।
महामहिम की गुण-गुण-गाथा प्रेम भाव से-
सुनें और हर वर्ष सुनायें ॥१॥

वीरव्रती थे, धर्म मार्ग पर चलते-चलते-
किया उन्होंने अपना जीवन सुमन समर्पित ।
हर क्षण वैदिक सत्य सनातन सिद्धान्तों के-
मन्तव्यों को तर्कयुक्ति से किया समर्थित ॥२॥

ज्ञान-दीप थे अपने जैसे अगणित दीपक-
देव ! आपने हँस-हँस कर के और जलाये ।
श्रद्धा पूर्वक उनकी महिमा की पहचानें-
औ, दृढ़ता से श्रुतिसम्मत शुभपथ अपनायें ॥३॥

उनकी वाणी के निर्झर से भक्ति-सूर्यजा-
सरस भाव की जलधारा के साथ वही थी ।
तत्वों के गम्भीर-ज्ञान से पूरित गङ्गा-
सदा लेखनी में उनके सोत्साह रही थी ॥४॥

कर्म-सरस्वती का प्रवाह जीवन की अन्तिम-
घड़ियों तक उनमें पूरा था ।
परम पावनी इसी त्रिवेणी के संगम में-
आओ मिल कर आज नहायें ॥५॥

"संकल्पों की दृढ़ता को खण्डित करने हित-
क्रूर-परिस्थिति रूप सदा बदला करती है ।
कर्त्तव्यों की डगर कँटीली तो होती है-
मुसकाकर चलते को मंजिल वरती ही है" ॥६॥

सदा आपने इसी सूत्र पर जीवन ढ़ाला-
चरणों की रेखाओं पर हम भी बढ़ते हैं ।
विपदाओं की आंधी में पग-पग चल करके-
स्वर्णिम स्वप्नों को गौरव से सत्य बनायें ॥७॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्यों ? (पूर्वार्द्ध)

—शास्त्रार्थ महारथी श्री प० माधवाचार्य जी शास्त्री

देश वैचित्र्यवाद

(सर्वतीर्थानि पुण्यानि)

काश्मीर के ही परिमित क्षेत्र में केसर क्यों उत्पन्न होती हैं ? हरियाणे—खासकर नागौर— के ही गाय बैल क्यों उत्तम होते हैं ? सिंध-अरब के घोड़े सर्वश्रेष्ठ समझे जाते हैं ? मीठे जल से भरे नदी नद, समुद्र में गिरते ही खारे क्यों हो जाते हैं ? खारा समुद्र जल, सूर्य किरणों से आकृष्ट होने पर पुनः मीठा बनकर क्यों बरसता है ? जापान आदि पूर्व प्रदेशों के मनुष्य पीले रंग के अफरीका के हबशी काले रंग के, यूरोप आदि पाश्चात्य देशों के श्वेत वर्ण के और अमेरिका के लाल वर्ण के क्यों होते हैं ? भारतीय मनुष्य उक्त (पीला काला श्वेत और लाल) रंगों के संमिश्रण से बने पक्के रंग के क्यों होते हैं ? हिमालय में बर्फ, मलयागिरि में चन्दन, जांजीबार में लोंग, इसी प्रकार तत्तत् स्थानों में ही तत्तद् पदार्थ क्यों उत्पन्न होते हैं ? इन सब प्रश्नों का एक ही उत्तर हो सकता है कि सब देशों की भूमि, वहां का जलवायु और वहां का वातावरण समान नहीं होता किन्तु एक दूसरे की अपेक्षा अनेक प्रकार के वैचित्र्य से परिपूर्ण होता है। वस्तुतः सत्व रजः तम इन तीन गुणों के वैषम्य का परिणाम ही संसार है। ज्यों ज्यों यह वैषम्य परिसमाप्त होते होते समता आ जायगी त्यों ही प्रलय हो जायेगा, सो प्राकृतिक गुणों का वैषम्य सृष्टि है और साम्यावस्था प्रलय है।

वेद में देश वैचित्र्यवाद

अथर्ववेद में ऐसे अनेक प्रमाण विद्यमान हैं जो पृथ्वी अन्तरिक्ष और द्यौ स्थान के अमुक अमुक प्रदेशों को पवित्र और अमुक अमुक स्थानों को सुस्पष्ट अपवित्र कहते हैं, यथा—

(क) ये पृथिव्यां पुण्यलोकास्तानेव ते नावरुन्धे।

(ख) ये अन्तरिक्षे पुण्यलोका ये दिवि पुण्यलोकाः :

(ग) ये पुण्यानां पुण्यलोका य एवा परिमिताः पुण्यलोकाः।

(अथर्व १५।१३।२—१०)

(क्रमशः)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माधवो माधवाचार्यः

श्री रामचन्द्र जी शास्त्री, रामायणी

जिस प्रकार माधव (श्रीकृष्ण भगवान्) ने अर्जुन के संशयों का निवारण गीता के उपदेश के द्वारा किया था, उसी प्रकार शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० माधवाचार्य जी ने अपने उपदेशों, शास्त्रार्थों और 'पुराणदिग्दर्शन' 'कों' आदि महाग्रन्थ रच कर भारत एवं विदेशों लाखों लोगों के सन्देहों का विनाश कर के दिखा दिया। इस अंश में माधवाचार्य जी माधव के समान ही थे। भारत के दुर्भाग्य पूर्ण बंटवारे के पूर्व भक्त-राज प्रह्लाद की नगरी मुलतान (पश्चिमी पंजाब) में हम कुछ नवयुवकों-ने 'प्रह्लाद संकीर्तन मण्डल' की स्थापना की थी।

जिस के वार्षिक संकीर्तन सम्मेलनों में हजारों दूर-दूर के लोग भाग लेते थे। पाकिस्तान के निर्माण के अनन्तर मण्डल के प्रायः सभी सदस्य हापुड़ में आ गए। वहां पर भी वार्षिक सकीर्तन-सम्मेलनों का क्रम जारी रहा।

आर्य समाज के श्री रामचन्द्र जी देहलवी हापुड़ में ही रहते थे। सम्मेलन के दिनों में देहलवी जी के सहारे स्थानीय आर्य समाज संकीर्तन के विरुद्ध जोरदार जहर उगला करती थी। जिससे वहाँ का वातावरण विषाक्त बन जाता। मैंने प्रह्लाद संकीर्तन मण्डल वालों को सलाह दी कि हर वर्ष सम्मेलन से तीन-चार दिन पूर्व श्री पं. माधवाचार्य जी महा-राज के प्रवचनों का आयोजन करा लिया करो। जिस से वातावरण विशुद्ध हो जाया करेगा। फिर भक्तजन विशुद्ध वातावरण में भक्ति का पूरा २ रसास्वादन कर सकेंगे। यह उपाय अपना रंग लाया। एक वर्ष मुझे भी सम्मेलन वालों ने आमन्त्रित किया।

मैं दिल्ली से हापुड़ गया। शास्त्रार्थ महारथी माधवाचार्य जी की सिंह गर्जना के सामने किसी भी सियार के आने की हिम्मत नहीं पड़ती थी। उन्होंने बार-बार स्थानीय आर्य समाज को देहलवी जी के समेत अपने प्रवचन में आने की चुनौती दी। और कहा कि मौलाना रामचन्द्र जी देहलवी भगवन्नाम संकीर्तन की वैदिकता या अवैदिकता पर हजारों लोगों के सामने हमारे साथ शास्त्रार्थ कर लें। आचार्य जी देहलवी जी को वेदों शास्त्रों का विशेष विद्वान् नहीं मानते थे। कुरान में प्रगति होने के कारण उन्हें मौलाना के नाम से पुकारा करते थे, परन्तु देहलवी जी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को सामने आने का हौंसला नहीं हुआ। हर वर्ष सनातन धर्मी नेता भक्त रामशरण दास जी पिलखुवा से हापुड़ के संकीतन सम्मेलन में पधारा करते थे। भक्त जी से सर्वप्रथम भेंट मेरी उसी अवस र पर हुई थी। श्री माधवाचार्य जी की स्मृति हृदय पटल से कभी दूर नहीं हो सकती। उनका व्यक्तित्व अखिल भारतीय ही नहीं. वरन अन्तर्राष्ट्रीय था। सबसे बड़े हर्ष का विषय यह है कि उन के तीनों सुपुत्र श्री श्रीकण्ठ जी शास्त्री एम० ए०, शास्त्रार्थ केसरी श्री वीराचार्य जी एम० ए० पी-एच० डी०, एवं शास्त्रार्थ पंचानन श्रीप्रेमाचार्य जी एम० ए० अपने आदर्श पिता जी के चरण चिन्हों पर चल रहे हैं।

माधवो माधवाचार्यो मेधावी मार्गदर्शकः।
अद्यापि धर्मसंसारे सूर्यवत् संप्रकाशते॥

सादगी के प्रतीक : शास्त्रार्थमहारथी जी

—श्री पं० सुरेश जी शर्मा, रामायणी

गोरखपुर के विराट सनातन धर्म सम्मेलन में जाते हुये श्रद्धेय श्री महारथी जी का दर्शन मुझे लखनऊ स्टेशन पर हुआ। शास्त्री जी थर्ड क्लास के एक डिब्बे में बड़ी शान्ति से बैठे हुये थे। गर्मी के दिन थे, और डिब्बे में पंखा नहीं था। शास्त्री जी स्वयं अपने हाथ से पंखा झल रहे थे। मैंने प्रार्थना की कि शास्त्री जी! सैकेण्ड क्लास का टिकट ले लेते हैं, आराम के चलिए। शास्त्री जी ने मुस्करा कर कहा सभा की स्थिति थर्ड क्लास का ही किराया देने की है। सैकेण्ड क्लास के लिये कहना उचित नहीं है; समाज के साथ अन्याय करना होगा। आप भी बैठिए समाज के पैसे का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए हम लोग ऐसा अभ्यास स्थिर करके ही धर्म की, समाज की सेवा कर सकेंगे। शरीर को आराम तलबी में डालने वाले और सुविधाओं को लम्बी चौड़ी शर्तें मनवा कर प्रचार करने वाले धर्म सेवक और धर्म प्रचारक नहीं है—धर्म दोहक है। मैं शास्त्री जी की भावना समझ गया और वहीं बैठ गया। भविष्य में अपने लिए भी मैंने यही नियम बना लिया। जिसका निर्वाह आज तक कर रहा हूँ। श्री महारथी जी की यह सादगी एवं कष्ट सहिष्णुता की आदर्श प्रवृत्ति ही थी, जिसके कारण वे महानगरों से लेकर छोटे-छोटे ग्रामाञ्चलों तक एकमात्र धर्म प्रचार की भावना से अहर्निश पर्यटन करते रहे। आज की पीढ़ी को इस दिशा में गम्भीरता से विचार करना चाहिए।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रद्धेय दादा जी की डायरी का एक पृष्ठ.....

—श्री अरुणेश कौशिक एम० ए०

नहले पर दहला

हैदराबाद के सुप्रसिद्ध शास्त्रार्थ में पं० बुद्धदेव जी ने शोर डालने के लिए बार-बार गर्जकर महारथी जी से कहा कि 'जानते नहीं हो पण्डित जी ! आज किससे पाला पड़ा है मैं कौन हूँ।' समाजी इस गर्वोक्ति पर फूल कर कुप्पा हो गए परन्तु जब महारथी जी का उत्तर देने का अवसर आया तो उन्होंने प्रतिपक्षी के प्रमाणों और युक्तियों का उचित उत्तर देने के बाद इस गर्वोक्ति के जवाब में कहा कि श्री बुद्धदेव जी, आप बार-बार कहते हैं कि 'आप जानते नहीं, मैं कौन हूँ' सो श्रीमान् जी—

हम खूब जानते हैं बुलबुल तेरी हकीकत,
इक चूंच है जरा-सी दो पर लगे हुवे हैं।

बस, यह शेर सुनकर उर्दू शायरी की शौकीन हैदराबादी जनता ठहाका मार कर वाह-वाह कर उठी, बुद्धदेव जी बड़े झेंपे। वास्तव में इसी नोक-झोंक से वे ऐसे तेजोहत हुए कि उत्तरोत्तर उनके मस्तिष्क का स्तर बिगड़ता ही गया जिससे वे अन्त में स्वामी जी के चित्र पर प्रहार करने पर उतारू हो गए।

जनता की नब्ज पहिचानना ही व्याख्याता और शास्त्रार्थी की सफलता का मूल है। वेद शास्त्रों के प्रमाणों के आधार पर होने वाले शास्त्रार्थ में यद्यपि उर्दू की शेरबाजी का क्या प्रयोजन ? परन्तु उर्दू शायरी की अभ्यस्त मुस्लिम स्टेट की प्रजा शायद वेदशास्त्र के प्रमाणों से भी इतनी प्रभावित न हो पाती जितनी कि इस तुच्छ तुकबन्दी से हुई। महारथी जी द्वारा उक्त शेर के पाठ-परिवर्तन में भी उनकी गहरी प्रतिभा का परिचय मिलता हैं। वस्तुतः उक्त शेर की दूसरी कड़ी का शुद्ध पाठ है 'इक मुश्त हड्डियों पर दो पर लगे हुवे हैं'। कहना न होगा कि यदि इसे इसी रूप में पढ़ा जाता तो उर्दू के क्लिष्ट शब्द 'मुश्त' को बहुत लोग न समझ पाते रस भंग ही हो जाता। फिर 'मुट्ठी भर हड्डियों पर दो पर लगे हैं' इससे अधिक रस 'इक चूंच है जरा सी' में भरा है। साथ ही महारथी जी ने अपने हाथ के अंगूठे और तर्जनी को मिलाकर 'चूंच' की सी मुद्रा बनाकर जब इसको अदा किया तो समा बन्ध गया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुमुखी प्रतिभा के धनी
श्रीपं० माधवाचार्य जी शास्त्री

—श्री डा. भीष्मदत्त जी शर्मा एम. ए., पीएच. डी.
(मंत्री—धर्म सङ्घ, मेरठ)

परम पूज्य पं० माधवाचार्य जी महाराज का पुण्य स्मरण करते ही ऐसा व्यक्तित्व आंखों के समक्ष प्रकट हो जाता है जो सनातन धर्म के लिए जीवन भर जूझता रहा। उनका व्यक्तित्व इतना आकर्षक, मोहक एवं लोकप्रिय था कि जो व्यक्ति एक बार भी उनके सम्पर्क में आया उसे यही अनुभूति हुई कि शास्त्रार्थ महारथी जी उसके हैं। आज उन जैसी सिंह गर्जना कर नास्तिको, अर्ध नास्तिको, सेक्यूलरिष्टों तथा कम्यूनिष्टों आदि धर्म विरोधियों को ललकारने वाला कौन है ? वह ज्ञान, भक्ति, कर्म, योग तथा त्याग की साक्षात् मूर्ति थे।

धर्म, संस्कृति एवं अध्यात्म के महान् विचारक पूज्य शास्त्री जी के अदम्य उत्साह, उत्कट लगन अथक परिश्रम तथा अद्भुत प्रतिभा को देखकर प्राचीन ऋषि मुनियों का स्मरण हो आता था। वस्तुतः आचार्य जी का व्यक्तित्व समग्रता से परिपूर्ण था। उनके गुणगौरव का वर्णन करना सूर्य को दीपक दिखाना है।

उन जैसे लोकोत्तर धर्मनिष्ठ, उत्कृष्ट विद्वान, असाधारण वाक्पटु, उच्च-कोटि के शास्त्रार्थ महारथी, ओजस्वी वक्ता, प्रभावशाली लेखक, महान् कर्मयोगी तथा निष्काम भक्त का आविर्भाव यदा कदा हुआ करता है। वस्तुतः मानवता उन्हें पाकर धन्य हो गयी। उनके महान् उपदेश, आदर्श एवं विचार आज भी हम सबके लिए प्रेरणा के स्रोत बने हुए हैं।

अपने देश में शास्त्रार्थ करने की महान् परम्परा रही है। आचार्य जी इस परम्परा के अलंकार स्वरुप थे। शास्त्रार्थ करने की उनमें अद्भुत क्षमता थी उनकी दलील, तर्क एवं युक्ति सुनकर विरोधी भी दांतों वले अंगुली दबा जाते थे। हजारों शास्त्रार्थों में उन्होंने आर्यसमाजियों, नास्तिकों, बौद्धों, जैनों, ईसाईयों, मुसलमानों कम्यूनिष्टों तथा सेक्यूलरिस्टों को परास्त कर सनातन धर्म की विजय-दुन्दुभी बजायी थी परन्तु इतना होने पर भी उनकी शालीनता देखते ही बनती थी। अभिमान उन्हें कभी छूता नहीं था। उनका शिष्ट व्यवहार पराये को भी अपना बना लेता था। विरोधी के साथ हुल्लडबाजी, धिंगामुस्ती जबरदस्ती और अशिष्टता का व्यवहार उन्हें अच्छा नहीं लगता था। शास्त्रीय प्रमाण देकर युक्ति-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
युक्त ढंग से विरोधी को परास्त करना उन्हें अभीष्ट रहता था। वह विरोध का गाली का उत्तर प्रमाण से, क्रोध का उत्तर युक्ति से और हुल्लडबाजी का उत्तर विनम्रता से देते थे। यद्यपि तत्कालीन आर्य समाजी विद्वान शास्त्रार्थों में अपने विरोधियों को अनेक प्रकार से परेशान करके उनके मनोबल को गिराने की कला प्रवीण थे तथापि आचार्य जी उनकी इस हीन मनोवृति का अपने आदर्श व्यवहार एवं युक्तियुक्त प्रमाण समन्वित शास्त्रार्थ पद्धति से उत्तर देते थे। वह वस्तुतः महापुरुष थे। शास्त्रार्थ तत्त्वनिर्णय के लिए होता है न किसी को अपमानित करने के लिए। ऐसे महान् उद्देश्य को लेकर शास्त्रार्थ करने वाले विरले ही होते ही होते हैं। शास्त्रार्थ महारथी जी इसी कोटि में आते हैं। उनके जीवन एवं व्यवहार में यह श्लोक अक्षरशः चरितार्थ होता था—

विद्या विवादाय धनं मदाय शक्तिः परेषाम् परिपीडनाय।
खलस्य साधोर्विपरीतमेतत् ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय॥

आचार्य जी अत्यन्त हंसमुख एवं मनोविनोदी थे। उनके भाषण मनोविनोद से परिपूर्ण होते थे। श्रोता उनके चुटकले सुनकर हंसी में लोटपोट हो जाते थे। वह मानवता की साकार मूर्ति थे। उनमें अपार करुणा, दया, क्षमा एवं स्नेहशीलता हिलोरें लेती थी। उनके पाण्डित्य का तो कहना ही क्या? वेद उपनिषद, षड्दर्शन, पुराण, महाभारत, रामायण, गीता तथा अन्यान्य धर्मशास्त्र आदि उन्हें हस्तामलकवत् सिद्ध थे। हिन्दू शास्त्रों तथा पश्चिमी साहित्य के तो वह मर्मज्ञ विद्वान थे। उनके प्रवचन के समय ऐसा प्रतीत होता था कि सम्पूर्ण वाङ्मय उन्हें कण्ठाग्र है। आस्तिक, नास्तिक, मुस्लिम, बौद्ध, जैन, कम्यूनिष्ट, सोशिलिष्ट तथा सेक्यूलरिष्ट आदि सभी प्रकार के दर्शनों का उन्होंने गहन अध्ययन किया था। उनका दार्शनिक ज्ञान इतना व्यापक एवं ठोस था विद्वान उन्हें देवी सरस्वती का अवतार कहने लगे थे। वह वेद शास्त्रों पर आधारित सनातन धर्म की महान् विचारधारा के उद्धार के लिए अवतीर्ण हुए थे। महर्षि वाल्मीकि, मनु, याज्ञवल्क्य, व्यास, शंकर, रामानुज, मध्व, निम्बार्क, वल्लभ सायण तथा महाप्रभु चैतन्य एवं महात्मा तुलसीदास आदि की विचार परम्परा के वह देदीप्यमान सूर्य थे। उनके दार्शनिक विचारों ने पूरे ६० वर्षों तक मानव समाज के मनः मस्तिष्क को धर्म तथा अध्यात्म की ओर उत्प्रेरित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

धार्मिक इतिहास में पूज्य शास्त्रार्थ महारथी जी की प्रसिद्धि उत्कृष्ट एवं प्रभावशाली वक्ता के रूप में युग-युगों तक रहेगी। वह क्षेत्र के अलंकारस्वरूप थे। उनकी वाणी में विलक्षण आकर्षण, वचनों में अजीब जादू तथा शब्दों में अद्भुत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माधुर्य विद्यमान था। अहो ! लोकोत्तर निर्भीकता तथा स्वाभाविक विचारभिव्यक्ति का वर्णन किन शब्दों में किया जाये ? भारी से भारी जन समुदाय भी आचार्य जी के भाषण को मंत्र मुग्ध होकर सुनता था। घण्टों तक बोल कर भी वह नहीं थकते थे और श्रोता भी उन्हें सुनता हुआ ऊबता नहीं था। वह वाक्सिद्ध महा-पुरुष थे। मां सरस्वती की उन पर अपूर्व कृपा थी। प्रवचन में भाषा, भाव एवं विषय उनके इशारों पर नाचते थे। उनका नाम सुनकर लोग उन्हें सुनने के लिए दौड़ पड़ते थे। हजारों धर्म सभाओं में दिये गये उनके प्रवचनों की गूँज आज भी लोगों के मन मस्तिष्क में विद्यमान है।

आचार्य जी के अविर्भाव के समय वेदोपनिषद्, पुराण, षड्दर्शन तथा मन्वादि की धर्मविरोधी व्याख्याओं एवं भाष्यों से जनता किं कर्तव्यविमूढ होकर धर्म विमुखता की ओर अग्रसर हो रही थी। ऐसी दशा में वेद शास्त्र प्रतिपादित धर्मानुकूल साहित्य रचना की परम आवश्यता थी। पूज्य आचार्य ने वेद, पुराण, उपनिषद्, धर्म शास्त्र दर्शन संबंधी ग्रन्थों का प्रणयन कर अपनी महान् लेखन क्षमता का परिचय दिया है। उनके 'पुराणदिग्दर्शन' 'क्यो', वेद भाष्य', मूर्तिपूजा विज्ञान' 'श्राद्धविज्ञान' 'ग्रह पूजन विज्ञान' 'वेददिग्दर्शन' तथा 'इष्टान्त दिग्दर्शन' दर्जनों ऐसे अनमोल ग्रन्थ हैं जिन्हें पढ़कर हिन्दु सनातनी जनता ने अपने विस्मृत स्वरूप को पहचाना उनके द्वारा संचालित 'लोकालोक' मासिक पत्र ने पत्रकारिता के क्षेत्र में सनातन धर्म की मान्यताओं के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योग दिया है वस्तुतः वह धर्म, संस्कृति एवं अध्यात्म के उन्नयन के लिए अपनी लौह लेखनी से हिन्दु जनता को आजीवन उपकृत करते रहे।

आचार्य जी सनातन धर्म के सजग प्रहरी थे। उनकी सनातन धर्म दिग्विजय मंडल' संस्था आज भी जो महनीय कार्य कर रही है वह धर्म के क्षेत्र में अतुलनीय है। पूज्य शास्त्रार्थ महारथी के समग्र कार्यों के सिंहावलोकन से धर्म के लिए उनकी व्यग्रता का पता चलता है। शताब्दियों बाद उनके रूप में ईश्वरीय अनुग्रह ने अवतीर्ण होकर सनातन धर्म का त्राण किया था। वह सनातनी जगत् की दिव्य विभूति हैं। जगद्गुरु शंकराचार्य परम पूज्य स्वामी कृष्णबोधाश्रम जी महाराज एवं धर्म सम्राट अनन्त श्री विभूषित श्री स्वामीं करपात्री जी महाराज सदृश महापुरुष आचार्य जी का अत्यन्त आदर करते थे। आज उनका नश्वर शरीर न होने पर भी उनकी शिक्षा, उपदेश, सिद्धान्त एवं प्रेरणा हमें सनातन धर्म पालन का पालन करने का आवाहन कर रही हैं। श्रीमन्नारायण की कृपा से हम इसके योग्य सिद्ध हो—यही उनकी पावन जयन्ती के अवसर पर प्रार्थना है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कैकेयी का अन्तर्द्वन्द्व

मानस मर्मज्ञ श्री पं० सुरेश जी शर्मा, रामायणी

(गतांक से आगे)

राम निज प्रासाद में बैठे हुए, गहन चिन्ता में सहज पैठे हुए।
खिन्न मन था आर्त जन के छोह से, चित्त था उद्विग्न उहापोह से ॥१४॥

याद आ जाती भरत से बन्धु की, छल छलाती आंख करुणा सिन्धु की।
ध्यान में आते कभी वे चित्र थे, जो लखे जब साथ विश्वामित्र थे ॥१५॥

आक्रमणकारी सुबाहू ताड़का मुनिकृपा ही थी हमारी रक्षिका।
देखते ही देखते मारे गये, यज्ञ रक्षा का सुयश हम पा गये ॥१६॥

एक ही शर से हरा वह नीच भी, सिन्धु तट पर जा गिरा मारीच भी।
शापयुक्ता नारि पत्थर सी पड़ी, वह अहिल्या हो गई उठ कर खड़ी ॥१७॥

किन्तु इतने में अहो क्या सार है ? क्या हुआ हलका धरा का भार है।
घिर रही पृथ्वी दुखों के भार से, सन्तगण सन्तप्त अत्याचार से ॥१८॥

सोच भी पाता नहीं क्या कुछ करूं, किस तरह से सज्जनों का दुख हरूं।
फिर रहे थे राम चिन्तन में जभी, अनुचरों ने सामने आकर तभी ॥१९॥

सूचना दी सरस शब्दों में बड़े द्वार पर गुरुदेव आकर है खड़े।
आगमन सुन कर तुरत श्री राम भी, द्वार की ही ओर उठ धाये तभी ॥२०॥

सामने गुरुदेव को लखकर खड़े, दण्डवत् श्रीराम चरणों पर पड़े।
स्वयं पर लख कर गुरु जी की कृपा हो गये वे धन्य आशीर्वाद पा ॥२१॥

सहित आदर ला उन्हें सुख धाम ने उच्च आसन पर बिठाया राम ने।
और बोले दीन हो मुनि राज से, नाथ के दर्शन हुए किस काम से ॥२२॥

आगमन से नाथ सम्मानित किया, दास को गौरव दिलाकर हित किया।
स्वस्थ हो गुरुदेव बोले राम से, वत्स आया हूँ जरूरी काम से ॥२३॥

भूप ने अभिषेक आयोजन रचा, है नवल उत्साह जन जन में मचा।
घोषणा अवधेश ने की है अभी, हो उठी जनता प्रफुल्लित है सभी ॥२४॥

छा रहा सब ओर इस से हर्ष है, लोक का इसमें छिपा उत्कर्ष है।
मात कौशल्या, सुमित्रा कैकेयी, श्रवण कर सन्देश हर्षित हो गयी ॥२५॥

इस लिये करना अभी कुछ कार्य है, भार लेने से प्रथम अनिवार्य है।
लोक रंजन की करो आराधना, बस प्रजा पालन बनाओ साधना ॥२६॥

श्रवण कर श्रीराम ने गुरुदेव से, सहज ही देखा उन्हें कुछ खेद से।
जोड़ कर बोले विनय सुन लीजिये, फिर उचित मुझ को सिखावन दीजिये ॥२७

देश है संत्रस्त अत्याचार से दुखित धरणी दुर्जनों के भार से।
दीन दुखियों पर कठोर प्रहार है, मच रहा चहुं ओर हाहाकार है ॥२८॥

(क्रमशः)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महा सरस्वती के रूप में भगवती जगदम्बा का अवतार

—डा० भीष्मदत्त जी शर्मा एम० ए०, पी-एच० डी०

(गतांक से आगे)

दुर्गा सप्तशती में वर्णित कथा के अनुसार राजा सुरथ और समाधि वैश्य सांसारिक दुःखों से उत्पीड़ित होकर जब महर्षि मेधा की शरण में जाते हैं तो ऋषि के मन में दोनों के कल्याण की कामना जाग उठती है। वह उन दोनों को महा-शक्ति मां दुर्गा के महत्त्व का परिचय कराते हुए शरणागति का उपदेश देते हैं—

"तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम्।
आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा" ॥ १३।४-५ ॥

वस्तुतः मां दुर्गा सम्पूर्ण प्रपञ्च की अधिष्ठात्री होने से उपासनीया है। उसी की कृपा से विरक्त संन्यासी परमहंसों को आत्मसाक्षात्कार होता है। वही समस्त संकटों से छुड़ाने वाली महाशक्ति है। शत्रुओं द्वारा पराजित राज सुरथ और परि-वार जनों से तिरस्कृत समाधि वैश्य के लिये मेधा ऋषि के ये वचन महान् संबल थे। अतः उन दोनों ने सभी ओर से मन हटाकर भगवती के लीला चरित्र सुनने एवं उनके तत्त्व को जानने की इच्छा प्रकट की। यहीं से प्रारम्भ होता है यह दिव्य स्तोत्र जिसका आश्रय लेने से मनुष्य कृतकृत्य हो जाता है। महर्षि मेधा ने भगवती के प्रथम चरित के रूप में महाकाली की दिव्य लीला का सरस वर्णन किया है। कमलयोनि भगवान् ब्रह्मा को मारने के लिये उद्यत मधु-कैटभ दैत्यों का संहार कराने वाली यही महामाया है। दुर्गासप्तशती के प्रथम अध्याय में इसी प्रथम चरित्र का वर्णन किया गया है। ब्रह्मा, विष्णु एवं शिवादि देवताओं के अंशों से उत्पन्न महालक्ष्मीस्वरूपा माँ दुर्गा का भव्य चित्रण मध्यम चरित्र के रूप में द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ अध्यायों में हुआ है। महिषासुर दैत्य के संहार की लीला इसी स्वरूप की है। 'लोकालोक' में इन दोनों चरित्रों पर हमारे लेख विगत अंकों में प्रकाशित हो चुके हैं। अब मां दुर्गा के उत्तम चरित्र की दिव्य लीलाओं के वर्णन से हम इस लेखमाला को आगे बढ़ा रहे है।

श्री दुर्गा सप्तशती के अनुसार उत्तम चरित्र के रुद्र ऋषि, महासरस्वती देवता, अनुष्टुप छन्द, भीमा शक्ति, भ्रामरी बीज, सूर्य तत्त्व, सामवेद स्वरूप तथा महासरस्वती की प्रीति में इसका विनियोग है। पांचवें से दसवें अध्याय तक भगवती

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्वारा आसुरी शक्ति के पराभव का बड़ा मनोहर वर्णन किया गया है। एकादश अध्याय में देवताओं ने राक्षसी आतंक से मुक्त होकर जगदम्बा भयवती की स्तुति की है। द्वादश अध्याय में मां दुर्गा ने स्वयं अपने मुखारविन्द से इस स्तोत्र के पाठ, श्रवण एवं अनुष्ठान के दिव्य महत्त्व का वर्णन किया है। त्रयोदश अध्याय में विधि पूर्वक इसका अनुष्ठान करने पर राजा सुरथ को अपने राज्य की प्राप्ति और सावर्णिक मनु होने के वरदान का वर्णन है। समाधि वैश्य को मोक्ष प्राप्ति का उल्लेख भी इसी अध्याय में मिलता है। यह समस्त वर्णन उत्तम चरित्र के अन्तर्गत आता है। भगवती की कृपा से सांसारिक रूप से उत्पीड़ित मानव अक्षय सुख-शांति प्राप्त कर सकता है यही इस स्तोत्र में सर्वत्र प्रतिपादित किया गया है। भगवती का उत्तरचरित्र पांचवे अध्याय से प्रारम्भ होता है। महासरस्वती के स्वरूप का चिन्तन करते हुए ऋषि मेधा ने शुम्भ-निशुम्भ नाम के दैत्यों से उत्पीड़ित देव समाज की मुक्ति के लिये उनके अवतार लेने की सरस कथा का जो वर्णन किया है वही पांचवे अध्याय का प्रतिपाद्य विषय है।

भक्तों की रक्षा के लिये मां सरस्वती अपने करकमलों में घंटा, शूल, हल, शंख, मूसल, चक्र, धनुष और बाण धारण करती हैं। भक्तों को सुख पहुँचाने के लिये शरद ऋतु के समान शोभा सम्पन्न चन्द्रमा जैसी उनकी मनोहर आभा-प्रभा है। उन्होंने तीनों लोकों को धारण कर रखा है और शुंभ आदि दैत्यों का नाश किया है। गौरी (पार्वती) के शरीर से उनका प्राकट्य हुआ है। ऐसी सरस्वती का भक्त-जनों को निरंतर भजन करते हुए इस पावन चरित्र का श्रवण करना चाहिए। इस चरित्र में भगवती के उस सम्मोहनकारी रूप का वर्णन किया गया है जो ज्ञानी जनों के मनों को भी बलात् मोहित कर लेता है—

ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥

पूर्व समय में शुम्भ-निशुम्भ नामक दैत्यों ने देवराज इन्द्र के हाथ से तीनों लोकों का राज्य और यज्ञभाग छीन कर स्वर्ग पर अधिकार कर लिया। सूर्य, चन्द्रमा, कुबेर यम और वरुण आदि देवता अधिकार भ्रष्ट होकर स्वर्ग से निष्कासित हो गए। वायु और अग्नि का कार्यभी उन्हीं दोनों असुरों ने प्रारम्भ कर दिया। तिरस्कृत, अपमानित एवं राज्यभ्रष्ट सभी देवों ने भगवती का स्मरण किया क्योंकि आपत्तिकाल में स्मरण करने पर भगवती ने उन्हें सहायता देने का वचन दिया था। अतः समस्त देवता एकजुट होकर हिमालय पर गये और वहां मां की स्तुति करने लगे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवताओं की यह स्तुति देवीसूक्त के नाम से प्रसिद्ध है। इस सूक्त में परमसिद्ध मंत्रों का संग्रह हुआ है। विभिन्न प्रकार की कामनाओं को लेकर इसके पाठ, जाप एवं ध्यान से शीघ्र सफलता मिलती है। इस भक्तिपूर्णसूक्त का एक एक मंत्र मां जगदम्बा के अद्वैत स्वरूप की अभिव्यंजना से ओत-प्रोत है। बड़ी-प्रांजल, मधुर एवं मर्मस्पर्शी भाषा में सर्वत्र भगवती का गुणगान इस सूक्त में किया गया है। सूक्त का पाठ करते हुए भक्तों का भाव में लीन हो जाना तथा स्वयं को समग्ररूप से मां के चरण कमलों में समर्पित कर देना प्रायः देखने में आता है। संकट के समय इसके नियमित पाठ, जाप एवं ध्यान से संकट निवारण अनुभवसिद्ध माना जाता है। ऐसी महती सिद्धिदायक स्तुति से प्रसन्न हुई पार्वती गंगास्नान के लिए आई वैसे ही उनके द्वारा देवताओं से यह पूछने पर कि तुम लोग किसकी स्तुति कर रहे हो, उनके शरीर से अम्बिका देवी का प्रादुर्भाव हुआ और उन्होंने कहा कि ये सब देवता मेरी स्तुति कर रहे हैं। मां पार्वती के शरीर कोश से प्रकट होने के कारण अम्बिका समस्त लोकों में 'कौशिकी' के नाम से प्रसिद्ध हुई और पार्वती देवी का शरीर काले रंग का हो गया। उन्हीं की कालिका देवी के रूप में लोग पूजा करने लगे।

शुम्भ-निशुम्भ को युद्ध के लिये ललकारने को भगवती ने अम्बिका का परम मनोहर रूप धारण किया था। असुरों में कामांधता चरमसीमा पर होती है वे नारी के रूप-लावण्य पर आसक्त होकर काम एवं अज्ञान के वशीभूत हो जाते हैं और उनका विवेक नष्ट हो जाता है। यही हुआ। जब शुम्भ-निशुम्भ के दूतों (चण्ड और मुंड) ने अम्बिका के लोकोत्तर रूप सौन्दर्य की प्रशंसा की तो उन दोनों असुरों का कामान्ध मन उस स्त्रीरत्न को प्राप्त करने के लिए ललचा उठा। राक्षसों का जीवन संयम शून्य होता है। उनके लिये हर सुन्दरी भोग की वस्तु होती है। 'मातृवत् परदारेषु' का आदर्शभाव उनमें होता नहीं। वे काम, क्रोध, लोभ, मोह और मद की साक्षात् मूर्ति होते हैं। उनकी यही दुर्बलता उनके विनाश का कारण बनती है। अतः भगवती ने उनके संहार के लिये यह परम मनोहर रुप धारण किया था किन्तु असुरों का तामस अन्तः करण मां दुर्गा की लीला के रहस्य को भला कहां जान सकता था? यह स्त्रीरत्न अन्य रत्नों की भांति हमारे पास होना चाहिए-इसी मोह में फंसकर दैत्यराज शुंभ ने अपने दूत को पर्वत में विराजमान उस महासुन्दरी देवी को अपने पास लाने के लिए भेजा—

"निशम्येति वचः शुम्भः स तदा चण्डमुण्डयोः।
प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुरम्।" ५।१०२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूत ने जाकर भगवती से शुंभ का सन्देश कहा—

"स्त्रीरत्नभूतां त्वां देवि लोके मन्यामहे वयम्।
सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम्" ॥ ५ ॥

हे देवि ! हम लोग तुम्हें संसार की स्त्रियों में रत्न मानते हैं अतः तुम हमारे पास आ जाओ, क्योंकि रत्नों का उपयोग करने वाले हम ही हैं। असुरों की यह गर्वोक्ति उनके विनाश का खुला निमन्त्रण थी।

भगवती दुर्गा ने जब अहंकार से भरे ये वचन सुने तो वह मन ही मन गम्भीर भाव से मुस्करा कर कहने लगी—जो मुझे संग्राम में जीत लेगा, जो मेरे अभिमान को नष्ट कर देगा तथा संसार में जो मेरे समान बलवान होगा, वही मेरा पति होगा—

"यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति।
यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति" ॥ ५।१२०॥

इसलिए शुंभ हो या निशुंभ हो, यहां आ जायें, मेरे पर विजय पाकर मेरा पाणिग्रहण कर लें—

"तदागच्छतु शुंभोऽत्र निशुंभो वा महासुरः।
मां जित्वा किंचिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु" । ५।१२१॥

भगवती की इस सिंह-गर्जना में भारतीय आदर्श ललना का चरित्र बल मुखरित होकर नारी समाज को प्रेरणा दे रहा है कि उन्हें अपने शील की रक्षा के लिए सदा कटिबद्ध रहना चाहिए। आसुरी शक्ति को मां की यह चुनौती थी। दूत ने उन्हें समझाते हुए फिर कहा कि जिन शुंभ आदि दैत्यों के सामने इन्द्र प्रभृति सारे देवता भी युद्ध में नहीं खड़े हो पाते हैं, उनका तुम स्त्री होकर कैसे मुकाबला करोगी ?

"इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे।
शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखम् ॥ ५।१२५॥

भला भगवती जगदम्बा पर उनकी इस धमकी का क्या प्रभाव हो सकता था ? वह तो दुष्ट दलन के लिए अवतरित होकर यहां बैठी हुई थी। राक्षसों के संहार के लिए मां दुर्गा का यह उपक्रम था। अतः उन्होंने शुंभ के उस दूत से दृढ़तापूर्वक मना करते हुए यह सन्देश अपने राजा से कहने को कहा।

उन्हीं भगवती का लीला चरित हम सबके लिए उपासनीय है। नवरात्रि के पावनपर्व पर महाकाली, महालक्ष्मी एवं महासरस्वती स्वरूपा मां दुर्गा की आराधना कर हम अभीष्ट फल की प्राप्ति कर सकते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्रिया शक्ति

—श्री उमाकान्त केशव जी आप्टे

हमारे समाज में आयी अकर्मण्यता भी हमारे पतन का कारण है बाहर के आक्रमणकारी एकमात्र नहीं। यदि हम इस बात को ठीक-ठीक समझ लें तो अधिकांश काम बन जायेगा। इससे यह गलतफहमी भी दूर हो जायेगी कि हमारे उद्धार के लिए भी बाहर के लोग ही प्रयत्न करेंगे। हम अपनी जिम्मेवारी को समझ सकेंगे। अपने समाज के पतन की जिम्मेवारी हमारी है बाहरी आक्रमण कोई मुख्य बात नहीं है। जैसे किसी का हृदय दुर्बल हो तो उसे हृदय को बल देने वाला इंजेक्शन लगाना सही उपाय है न कि उसके चारों ओ सिपाही खड़े करना। सिपाही भी तो उसकी ही रक्षा कर सकते हैं जिसके शरीर में जीने के लिए पर्याप्त शक्ति हो। जिसके शरीर में कोई कमी या दोष है उसके लिए तो दोष दूर करना और शक्ति बढ़ाना ही उपाय है। यदि अन्दर की जीवनशक्ति कायम है तो मनुष्य बाहरी कारणों से नहीं मरता है। अन्दर की शक्ति कम हो जाने पर, बाहरी संकट का आक्रमण न होते हुए भी मनुष्य बिना मरे नहीं रहता है। मनुष्य के जीने-मरने का कारण उसमें आन्तरिक शक्ति का होना या न होना है।

क्रिया करते-करते उसका ज्ञान प्राप्त होता है और यदि मनुष्य गलत रास्ते भी जा रहा हो, तो धीरे-धीरे कभी न कभी उसे इसका ज्ञान होगा और वह सही रास्ते पर आयेगा। विशेषता केवल क्रियाशक्ति के विकास में नहीं है, क्रियाशक्ति सही दिशा में होनी चाहिए।

सही दिशा : सही प्रक्रिया

हमारी क्रियाशक्ति की दिशा गलत कैसे हो गयी? आज हम दुनिया भर की चिन्ता करते हैं और सोचते है कि यदि दुनिया की चिन्ता करते-करते अपने समाज को हानि भी पहुंची तो कोई बात नहीं। इसी चिन्तन-धारा के अनुसार हमारे आन्दोलन चलते हैं। पिछले ५०-५५ वर्षों के हमारे इतिहास में ऐसे प्रयत्न दिखाई देते है जिसमें हिन्दुओं की हानि करते हुए दुनिया भर का कल्याण सोचा गया था। ऐसा प्रयत्न करने वालों को हम दोषी ठहराते हैं। हिन्दु सभ्यता में सब प्रकार के श्रेष्ट आदर्शों का विकास हुआ है, जिसका अर्थ यह तो नहीं है कि मनुष्य-मात्र का भला करने की शक्ति जिस जाति में है, उस जाति को ही नाम शेष कर दिया जाय। यह तो वैसी ही बात हो गयी, जैसी नित्य सोने के अण्डे देने वाली हंसिनी की कहानी में लोभी मालिक ने कीया था। उसने सोचा कि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रोज-रोज एक अण्डा लिया जाय, इससे तो अच्छा यही है कि उसके अन्दर जितने अण्डे हैं, उन सबको एक ही दिन में निकाल लिया जाय। एक-एक लेना तो बहुत लम्बी बात है। इसके पेट में तो हजारों अण्डे होंगे। एक बार यदि उसका पेट चीर दिया जाय तो इसके सारे अण्डे मुझे मिल जायेंगे। यह सोचकर उसने उस हंसिनी को मार दिया। परन्तु उसने क्या देखा? हंसिनी को मारने के बाद उसके पेट में से एक भी अण्डा नहीं किनाला। वस्तुतः वह जो सोने का अण्डा देती थी उसका तो शरीर की प्रक्रिया से निर्माण होता था। उसके पेट में कोई हजारों अण्डे तो भरे हुए थे नहीं।

वस्तुतः यह आवश्यक है कि सारे संसार का कल्याण करने वाली हमारी यह श्रेष्ठ सभ्यता जीवित रहे जिससे सम्पूर्ण जगत का कल्याण हो। इसके लिए आवश्यक कर्म करना होगा। अपनी क्रियाशक्ति बढ़ाकर दुनिया को तकलीफ देना तो हमारे खून में ही नहीं हैं, न ही दूसरों को लूटना हमारी प्रवृति है। हमारी किसी भी चेष्टा, प्रयत्न और दौड़ धूप से किसी को भय नहीं होना चाहिए उसके कारण दूसरों पर मुसीबत आना एकदम असम्भव है।

पाश्चात्य लोगों की क्रियाशक्ति बढ़ने पर, जिस तरह अशान्ति की लहर फैली है, खून की नदियां बहती हैं, इधर-उधर लूट-पाट मची है, सब लोग दुःख से कराहते हैं, सबके मन में एक प्रकार की निराशा है। संसार के साधन बढ़ गये हैं अतएव अब क्या होगा? सारी सभ्यता का नाश हो जायेगा, संस्कृति का नाश हो जायेगा आदि भावनाओं से सभी ग्रसित हैं, वैसा भारत की सभ्यता में नहीं है। पाश्चात्यों की दौड़ धूप की शक्ति गलत दिशा में प्रयुक्त हुई है। उनको ऐसे कार्यों से रोकने के लिए एक नियंत्रक शक्ति की आवश्यकता है। उनकी शक्ति को योग्य दिशा में लगाने के लिए दुनिया में कोई सात्विक शक्ति आगे आनी चाहिए। ऐसी सात्विक शक्ति भारतवर्ष में है। भारतवर्ष को संसार के कल्याण के लिए नेतृत्व करना होगा। उससे किसी को कष्ट या किसी का अकल्याण न हो, उनकी बुद्धि, शक्ति, साहस आदि का सबके कल्याण के लिए ही प्रयोग हो, इसके लिए भारत का कर्तव्य है कि वह सारे संसार का गुरु बनकर अग्रसर हो और अपनी सभ्यता के आधार पर सम्पूर्ण विश्व के कल्याण के लिए उस शक्ति के प्रयोग का आयोजन करे। लेकिन हमारे यहां विगत कुछ वर्षों में इसके विपरीत दिशा में क्रियाशक्ति को प्रयुक्त किया गया है। जिस रीति से अपनी रक्षा होगी, साथ ही संसार की आसुरी शक्ति भी नियंत्रित होगी, उसका योग्य दिशा में उपयोग होगा, उसको हमने छोड़ दिया है। मानों, अपने समाज के ऊपर आने वाले

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आघातों से उसकी रक्षा करना पाप है। यदि किसी के मन में हिन्दुत्व के भाव आते हैं तो कहा कि वह संकुचित है, वह संकीर्ण और सम्प्रदायवादी हो गया है। यदि किसी ने कहा कि पुरानी बातें अच्छी हैं और दूसरों की दोस्ती खरीदने के लिए अपनी बातें छोड़नी नहीं चाहिए। तो वह पुरातन-पंथी और आदि दृष्टि का हो गया।

हमारे समाज ने अपने सनातन जीवन को भुला दिया है। अपने ऊपर आने वाले आक्रमणों को न रोकना, सनातन जीवन के मूल को हमेशा के लिए नष्ट होते देखना, और कहना कि हम संसार का कल्याण कर रहे हैं--यह सर्व-नाश और आत्महत्या ही है। जिस बीज को जमीन में गाड़ने के बाद सौ गुना फसल मिलने वाली है वह बीज ही यदि हमने दूसरे को दे दिया, या खा डाला, तो जो फसल हमको मिलती और जिसे सौ गुना-हजार गुना करके हम सब लोगों को भरपेट भोजन दे सकते हैं, वह संभव न होगा। दान अच्छी चीज है, लेकिन सब लोगों को भरपेट भोजन देने का साधन जुटाना और भी अच्छा है। अपने हाथ में मुट्ठी भर गेहूं ले किसी का पेट नहीं भरता। इस मुट्ठी भर को बोना और हजार गुना बना कर उसमें से २५ मुट्ठी अपने लिए २५ मुट्ठी आगे फिर उगाने के लिए रखना, यह व्यावहारिक मार्ग है। इस मार्ग को ही सही कहा जा सकता है। इसकी शिक्षा समाज को देना आवश्यक है।

हिन्दू जाति को छोड़कर और किसी के पास सनातन सभ्यता के बीज नहीं। सम्पूर्ण मानवता के कल्याण का आदर्श केवल हमारे पास है। सबके कल्याण के लिए हमारे पास राम का आदर्श है। सम्पूर्ण शक्तियों का विकास करने के लिए मनुष्य को क्रियाप्रवृत्त रहना चाहिए। हमारे यहां शक्ति निर्माण करना और उसका उचित उपयोग दोनों बातों का समन्वय है। पश्चिम के लोगों में और हममें यह अन्तर है। वे केवल शक्ति बढ़ाते हैं उनकी दिशा सही नहीं है। परन्तु प्राचीन काल से हमारे यहां के लोगों ने सही दिशा ली है और दुनिया का कल्याण करने के लिए प्रयत्न भी करते हैं। आप अपने देश के गांवों में देखेंगे तो विश्व-बन्धुत्व की बातें ही मिलेंगी। इस कल्याणकारी शक्ति का विकास होना चाहिए।

शक्ति-संचय

सम्पूर्ण संसार की रक्षा करने की शक्ति से युक्त हिन्दु जाति को जीवित करते हुए उसे शक्तिशाली और वैभवशाली बनाना हमारे लिए क्रियाशक्ति के उपयोग का सर्वोत्तम ध्येय है। कार्यशक्ति बढ़ने से उत्साह और आशा बढ़ती

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है, परन्तु शक्ति का जल्दी प्रयोग नहीं करना चाहिए। शक्ति का संचय करते जाये और उसे इतना बढ़ने दें कि धीरे-धीरे उसका प्रवाह अपने आप वह निकले। जैसे अथाह जलराशि संचित होने पर उसका प्रवाह वह निकलने पर ध्येय रूपी समुद्र तक पहुंचे बिना नहीं रुकेगा, वैसे ही शक्ति प्रवाह अपने-आप निकल पड़ने तक शक्ति-संचय करो, उसका अपव्यय न करो और न विनियोग करो। लोग कितना ही कहें तो भी उधर ध्यान न देकर शक्ति की रक्षा करें। निष्क्रियता, अकर्मण्यता के आरोपों की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। सामर्थ्य सम्पन्न आदर्श ही संसार में समादृत होता है। मानवता की विजय के लिये सात्त्विक शक्ति आवश्यक है। हमें अपनी सात्विक शक्ति का प्रभाव इस संसार में उत्पन्न करना होगा। इससे संसार का अकल्याण होने का कोई डर नहीं हैं, यह तो विश्व-कल्याण की शक्ति होगी।

सतत कर्मशील हृदय

हमें हिन्दु जाति के अन्दर आई दुर्बलता को दूर करना होगा। हाथ का सम्बन्ध पैर से नहीं, नाक का सम्बन्ध कान से नहीं, इस प्रकार की अवस्था को बदलने के लिए, समाज-शरीर के हृदय-पिंड की तरह की एक संगठन क्षमता आवश्यक है। हमें सबको नियंत्रित रखने, स्फूर्ति देने और योग्य दिशा में चलाने के लिए आवश्यक सामर्थ्य उपार्जित करना है। हृदय में शरीर का सारा गंदा खून एकत्र होता है, फेफड़ों में वह साफ होता है और फिर हृदय के माध्यम के सारे शरीर में उसका वितरण होता है। नस-नाड़ियां जिस अंग को जितना आवश्यक है, उतना रक्त पहुंचाती हैं। जितना हाथ को चाहिए, उतना हाथ को और जितना पैर को चाहिए, उतना पैर को—इसी प्रकार सारे शरीर को पोषण मिलता है, तभी हाथ, पैर, आंख, कान, सिर आदि ठीक ढंग से काम करते हैं। हृदय उन सब की क्रियाओं का मार्ग दर्शक और स्फूर्तिकेन्द्र है। वह सब अंगों की शक्ति का स्रोत है, सबको चलाने वाली तंत्री है। यदि शरीर से हाथ कट गया, पैर गया, तो भी वह जीवित रहता है, लेकिन सब का प्रेरणा-केन्द्र हृदय यदि निष्क्रिय हो गया, तो सब ठण्डे पड़ जाते हैं। शरीर के शेष अंग विश्राम कर सकते हैं, करते भी हैं, परन्तु हृदय कभी विश्राम नहीं करता। उसकी कर्मचेतना अखण्ड चलती है। उसमें अपने काम करने का दिखावा करने की कोई इच्छा नहीं हैं। वह नींव के पत्थर की तरह बाहरी हवा से दूर रहता है। उसें अन्य अंगों से धन्यवाद पाने का विचार भी नहीं होता।

नींव के पत्थर

नींव के पत्थर भी इमारत का बोझ वर्षानुवर्ष उठाते हैं, फिर भी अपना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्थान नहीं छोड़ते, न ही टूट जाते हैं। ऊपर जाने की इच्छा नहीं, स्थान छोड़ने का नाम तक नहीं, टूटने का प्रश्न नहीं, लोगों को अपना नाम मालूम कराने का विचार नहीं, ऐसे निःस्वार्थ, दृढ़, पवित्र और विशुद्ध आचरण वाले अखण्ड अविरल कर्मशील प्रेरणास्रोत व्यक्ति चाहिए। ऐसे ही व्यक्तियों द्वारा समाज की धारणा होती है। इनका काम सिपाही का नहीं, फिर भी अगर अपने समाज पर किसी का हमला हुआ, मन्दिरों को तोड़ने का प्रयत्न हुआ, तो ऐसे लोगों को वहां नहीं जाना चाहिए, ऐसी भी बात नहीं। जरूरत पड़ने पर यह भी करना होगा। यह कार्य तो एक संत का कार्य है, जो समाज की धारणा करता है। हमारे समाज में साधु, संन्यासी, भक्त और संत ही मूलाधार हैं। दुनिया के अन्य समाजों में कहीं श्रमिकों का प्रभुत्व है, कहीं धनी लोगों का प्रभुत्व है, तो कहीं साहस एवं शक्ति से सम्पन्न वर्ग का प्रभाव है, लेकिन हमारे समाज में निःस्वार्थ भाव से कर्म करने वाले तपस्वी एवं त्यागी लोगों का वर्ग ही केन्द्र-स्थान में है।

समन्वय आवश्यक

साधु और सिपाही का समन्वय आवश्यक है। जिसके हाथ में बागडोर है, वह भी ताकतवर होना चाहिए। उनके हाथ मजबूत होंगे तो घोड़े की ताकत भी योग्य काम में लगेगी। भारत में दुनिया को गुलाम बनाने की नहीं, उसके गुरुत्व की आकांक्षा है। आत्म-साक्षात्कार से आत्म-विश्वास और हिम्मत जागती है। आत्म-विश्वास होने पर ही प्रभाव उत्पन्न होता है। उसके बाद ही औरों का मार्गदर्शन सम्भव होगा।

दुनिया में आसुरी शक्ति बढ़ रही है। यह उसकी प्रगति नहीं है। यह तो पहाड़ पर चढ़ा कर नीचे गिराये जाने की सजा जैसा है। इस कथित प्रगति के आगे विनाश है। हमें दूसरे की क्रियाशक्ति की निन्दा नहीं करनी है। जो सत्यवृत्ति से कार्य कर रहे हैं, उन पर टीका-टिप्पणी करने की आवश्कयता नहीं है। यदि गलती होती है, तो भी सत्यवृत्ति से कार्य करने के कारण उसकी निन्दा का कोई भाव नहीं रखना चाहिए।

इस स्थिति से निपटने के लिए पर्याप्त शाक्ति आवश्यक है। उसके लिए हमें शक्ति-संचय करना है उसके विनियोग से बचना है। गेरुआ वस्त्र न धारण करते हुए भी, संन्यासी का काम करना—यह एक श्रेष्ठ नागरिक की भूमिका है। हमें अपने श्रेष्ठ जीवन से लोगों को निर्भय और पवित्र आचरण वाला बनाना है। सम्यक् आत्मदर्शन से ही निर्भयता और पवित्रता आयेगी तथा तभी योग्य

(शेष पृष्ठ २९ पर)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नल-दमयन्ती

—श्री प्रो० शिवनारायण जी सक्सैना 'मानस भ्रमर'

(गतांक से आगे)

[अष्टम सर्ग]

स्वर्णिम किरणें सूर्य देव की वातायन से झांक रही ।
खड़ी हुई दमयन्ती की वे मानो शोभा ताक रही ॥५१॥
शीत लहर के झोंके आकर तन में कम्पन सा करते ।
खड़ी हुई थी जहाँ वियोगिन उसके मन में दुःख भरते ॥५२॥
अपलक देख रही थी बाला ऊषा पीछे उठे पतंग ।
बहा-बहा कर अविरल आंसू नयनों का था अरुणिम रंग ॥५३॥
मुसका करके हँसी दिशाएं तिमराच्छादन दूर हुआ ।
लोक शोक पंकज दुःख भागा सूर्य देव का उदय हुआ ॥५४॥
मलिन हुए थे उडुगन सारे अरुणोदय का भास हुआ ।
पति वियोग में खड़ी वियोगिन मिलनाशा का उदय हुया ॥५५॥
न ऊंन, तूल का वरण करूंगी वस्त्र न तन पर धारूंगी ।
ना जाने किस वेश में होंगे मैं निज इच्छा मारूंगी ॥५६॥
हाथ व्याल सा पड़ा हुआ था मणिमय खम्भे के ऊपर ।
दृष्टि गड़ाये खड़ी हुई थी आने वालों के ऊपर ॥५७॥
सहसा दृष्टि पड़ी फिर नीचे देव खड़ा था द्वारे पर ।
चिल्ला कर वह बोल रहा था फिर उसने देखा ऊपर ॥५८॥
कर प्रयत्न वह ऊपर पहुँचा देखा उस सुकुमारी को ।
देख वेश मन में सकुचाया समझूं भीम कुमारी को ? ॥५९॥
मैं विदर्भ नगरी का वासी ब्राह्मण मुझ को तुम जानो ।
दान्त दमन औ दम का मुझ को मित्र मुझे सच्चा मानो ॥६०॥
नैसर्गिक जो तिलक तुम्हारे मस्तक पर है शरमाया
चांद छिपा बदली के भीतर वैसे ही कुछ दर्शाया ॥६१॥
इससे हमने तुमको जाना दमयन्ती सी लगती हो ।
अनजाने में भूल हो सके नल अर्धाङ्गिनि भवती हो ॥६२॥
कमल नयन से आंसू टपके जैसे जलधर बरस पड़े ।
पीपल पात सरिस तन कांपा वचन दीन थे निकल पड़े ॥३६॥
दैव-प्रकोप हुआ यह द्विजवर ! फिरती विपदा की मारी ।
पता नहीं मिलता है उनका कलि घेरे अत्याचारी ॥६४॥

(क्रमशः)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नक्षत्र कहते हैं

डा. केदारनाथ जी जगता एम. ए., पीएच. डी.
व्याकरण, ज्योतिषाचार्य

फलादेश ज्येष्ठ मास १४ मई से १३ जून तक

चन्द्र राशि से भविष्य देखें।

मास—शासकों में अशान्ति का वातावरण रहे। कहीं राजनैतिक विप्लव की सम्भावना। पर्वतीय प्रदेशों में वातावरण में अशान्ति संभव।

मेष—मन-चंचल और अशान्त, अधिक व्यय, धन हानि, स्वजनों से मनोमालिन्य, बन्धन की आशंका, स्त्री से कलह, उदर नेत्र पीड़ा, यात्रा में भय, शरीरकष्ट, प्रयत्न से कार्य सिद्धि। मई १६, २६ जून १२,१३ सतर्क रहें।

वृष—शरीरकष्ट, प्रवास, यात्रा शत्रु चिन्ता, कष्ट, उदासी, द्रव्य हानि, विकास में प्रवृत्ति, विवाद पराजय, स्थान परिवर्तन, कार्य में सफलता। मई १६, २८, जून ६, १० सतर्क रहें।

मिथुन— सन्तान कष्ट, अध्ययन में बाधा, कुटुम्ब कलह, ज्वरादि से पीड़ा, मानसिक विकार शत्रु नाश, शुभयात्रा, स्त्री सुख। मई २१,२६, ३१, जून ८ सतर्क रहें।

कर्क—अधिक व्यय, कार्य बाधा, चिन्ता, उदासी घर से खिन्नता, उदर रोग स्थान हानि, बंधु पीड़ा, शत्रु पीड़ा अल्प सुख, सम्मान। मई २८ जून २, १० सतर्क रहें।

सिंह—स्वजनों से विवाद, सुख प्राप्ति, कार्य बाधा, संतान पीड़ा, उत्साह तथा पराक्रम वृद्धि, राजपक्ष से लाभ, कार्य बाधा से खेद, विवाद कार्य सिद्धि। मई १६, २६, जून ४,१३, सतर्क रहें।

कन्या—अकारण विवाद, मित्रों से मिलन, संतान से चिन्ता, अध्ययन में बाधा. शत्रु चोर भय धन हानि, मन में क्रोध मित्रादि से तिरस्कार पशुभय, सुख प्राप्ति। मई १६, २८, जून ५,६ सतर्क रहे।

तुला—गृह कलह, मन अशान्त, अनावश्यक व्यय, स्त्री से कलह, पीड़ा, समय की प्रतिकूलता रोगभय, स्थानभ्रंश, कार्य बाधा, अधिकारी से पीड़ा, धन लाभ। मई २१, ३०, ३१ जून ८ सतर्क रहे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वृश्चिक—शत्रु भय, स्त्री से कलह, अधिकव्यय, परिवार सुख, मन शंकालु, स्वास्थ्य हानि, धन लाभ, प्रयत्न से कार्यों में सफलता गुप्तरोग कलंक की आशंका अनेक अनर्थ मई २१, २४, जून २, ६, १० सतर्क रहें।

धनु—स्वजनों से विवाद, अनावश्यक व्यय, शत्रुवृद्धि, शत्रुपराजित यात्रा शरीर सुख, मानधन लाभ। मई १६, २६, जून ४, १२, १३ सतर्क रहें।

मकर—मित्रों से विवाद, संतान कष्ट, अध्ययन में बाधा व्यवसाय में बाधा व्यय अधिक, धन लाभ, दीनता, चिन्ता पित्त रोग कार्य बाधा, अशुभ कार्यों में प्रवृत्ति मई १८, १६, २८ जून ५, ६ सतर्क रहे।

कुम्भ—भ्रातृ सुख पित्तरोग, भाग्यहीनता, शत्रुभय, माता तथा मित्रों से सुख, शरीर में निर्बलता, सुख बाधा, खेद, तिरस्कार का भय। मई २१ ३०, ३१, जून ८ सतर्क रहें।

मीन—धन लाभ, सन्तान चिन्ता, स्वजनों से मन मुटाव, शत्रु-चोर भय, शरीर सुख शत्रुनाश, अभ्युदय, मान हानि, रोग-चोट भय। मई २४ जून २, ६, १० को सतर्क रहें।

ज्येष्ठमास के पर्व एवं त्यौहार

१८	मई	शुक्रवार	ज्येष्ठ	कृष्णा	तृतीया	गणेश चतुर्थीव्रत
२६	"	शनिवार	"	"	एकादशी	अपरा एकादशीव्रत
८	"	सोमवार	"	"	त्रयोदशी	सोम प्रदोषव्रत
३०	"	बुधवार	"	"	अमावस्या	वटसावित्री व्रत
३	जून	रविवार	"	शुक्ला	चतुर्थी	गणेश चतुर्थीव्रत
८	"	शुक्रवार	"	"	नवमी	गङ्गादशहरा
६	"	शनिवार	"	"	एकादशी	निर्जला एकादशीव्रत (स्मार्त)
१०	"	रविवार	"	"	द्वादशी	निर्जला एकादशीव्रत
११	"	सोमवार	"	"	त्रयोदशी	सोमप्रदोषव्रत
१३	"	बुधवार	"	"	पूर्णिमा	पूर्णिमाव्रत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नागार्जुन कोण्डा

डा. वेद प्रकाश जी शास्त्री, एम. ए. पीएच. डी., डी. लिट्.

(गतांक से आगे)

आयुर्वेद में भगवान् शिव को वैद्यनाथ कहा गया है। नागार्जुन उन्हीं वैद्यनाथ की कृपा पाने के लिये अपने आश्रय दाता की अनुमति लेकर श्रीशैलम् स्थान पर जहाँ न केवल दिव्यौषधियों की प्रचुरता है बल्कि भगवान् शिव जहां मल्लिकार्जुन रूप में सतत निवास करते हैं जाकर तपस्या करने लगे। इसी तपस्या काल में उनके मन में 'अमृत' निर्माण करने का विचार आया। उन्होंने अनेकानेक प्रयोग करते हुए लगभग अमृत जैसी वस्तु तैयार करली परन्तु इससे उन्हें पूर्ण सन्तोष नहीं हुआ। एक दिन वे भगवान् आशुतोष के मान्दर में बैठे हुये विचार करने लगे कि मैं ऐसी कौन सी वस्तु अपनी औषधि में मिलाऊं जिससे वह पूर्ण रूप से अमृत बन जाय। अचानक प्रभु की प्रेरणा से उन्हें एक औषधि को मिलाने की प्रेरणा मिली। वे तत्काल उस औषधि को मिलाने के लिये अपने स्थान की ओर बढ़े। जैसे ही वे अपने स्थान पर पहुँचे, उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति उनकी तैयार की हुई औषधिका पात्र उठाकर भाग रहा है। यह देख कर जैसे ही नागार्जुन ने उसे ललकारा, वह व्यक्ति अदृश्य हो गया। नागार्जुन यह देखकर जड़ हो गये और आर्त भाव से भगवान् शिव को पुकारने लगे। तभी उन्हें आकाशवाणी सुनाई दी—आचार्य नागार्जुन ! भगवान् शिव की प्रेरणा से जिस औषधि का ज्ञान तुम्हें हुआ है वस्तुतः उस औषधि को मिलाते ही तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाती। तुम्हारा अमृत निर्माण का उद्देश्य पूरा हो जाता, परन्तु मर्त्यलोक के वासी मर्त्य जब अमर हो जाते तब सृष्टि का विधान ही समाप्त हो जाता, देव और मानव में स्वर्ग और मर्त्य में अन्तर समाप्त हो जाता इसलिये स्वयं देवराज ने तुम्हारे औषधि पात्र का अपहरण कर लिया है। यह सुन कर नागार्जुन के क्रोध का ठिकाना न रहा। किसी प्रकार धैर्य-धारण कर उन्होंने कहा—यदि देवराज को यही अभिप्रेत है तो यही सही परन्तु मैं चाहता हूं कि कम से कम उनके दर्शन का सौभाग्य तो प्राप्त करलूं यह सुनते ही इन्द्र उनके सामने प्रगट हो गये। इन्द्र ने कहा भिषग्वर ! मैंने मानव समाज के हित की दृष्टि से ही यह सब किया है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
परन्तु मैं इस के बदले में दो वरदान आप को दे रहा हूँ – एक तो आप अमर होंगे तथा दूसरे रस (पारद) पर आपको सिद्धि प्राप्त होगी और आप अपने संकल्प 'रस सिद्धे करिष्यामि निर्दारिद्र्यमिदं जगत्' को पूरा कर सकेंगे। इसके साथ आप एक अन्य वरदान और इच्छानुसार मुझ से ले सकते हैं। नागार्जुन ने इस पर अपने आश्रय दाता की अमरता का वरदान मांगा इन्द्र ने उसके लिये इच्छा मृत्यु का वरदान दिया यह कहते हुये कि अमरता मानव के लिये अभिशाप सिद्ध हो सकती है अतः आपके आश्रय दाता को मैं यही वरदान देता हूँ कि वे जब तक चाहें इस भूतल कर रहें परन्तु जब भी उन्हें अपने जीवन पर ग्लानि होगी उन्हें देह त्याग कर देना/होगा।

नागार्जुन अपने उद्देश्य में सफल होकर लौटे। उन्होंने अपने आश्रय दाता को सारी घटना सुना कर उन्हें किसी सीमा तक आश्वस्त किया।

यहां रहते हुए नागार्जुन ने रस विषय में सिद्धि प्राप्त की और इतिहास साक्षी है कि उन्होंने ८०-८० मन स्वर्ण के ७० स्तम्भ तैयार कर-नालन्दा विश्व विद्यालय को समर्पित कर अपने संकल्प का प्रथम चरण पूरा किया—

अब नागार्जुन प्रतिदिन सन्ध्योपासन के उपरान्त तीन बार यह आवाज लगाते—'है कोई याचक !' और उस समय जो भी उनके पास पहुँचता उसकी इच्छा पूरी कर देते।

इधर राजा इच्छा मृत्यु का वरदान पाकर विषय वासना में लिप्त हो गया। वर्षों बीत गये। राजा ने अनेक विवाह किये, उन से सन्तान उत्पन्न हुई और यथा समय काल के गाल में समर गई परन्तु राजा पर आयु का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। तभी ईश्वरीय प्रेरणा से एक घटना घटी। राजा की वर्तमान रानी का आठ वर्षीय कुमार एक दिन खेल ही खेल में अपने साथी से कहने लगा अरे मित्र ! जब मैं राजा बनूंगा तब तुझे अपना प्रधान मन्त्री बनाऊँगा। पास में से कोई वृद्ध जा रहा था उसने इस बात को सुन कर कहा—कुमार ! इस भ्रम को मन से निकाल दो कि तुम कभी राजा बनोगे ? तुम्हारे न जाने कितने ज्येष्ठ भ्राता यही साध लिए यहां से विदा हो गये हैं।

राज कुमार को यह सुन कर बड़ा दुःख हुआ और वह अन्न जल त्याग कर घर में जा लेटा। मां के बहुत समझा बुझाकर पूछने पर उसने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपनी समस्या बताई। रानी ने कहा तुम्हारी समस्या का समाधान केवल आचार्य नागार्जुन के पास है, उन्हीं के पास जाओ।

राज कुमार मां की बात सुन कर जैसे ही घर से निकलने लगा एक वृद्ध सेवक ने उसे बताया कि तुम्हारे पिता को अमर बनाने वाला ही नागार्जुन है वह भला कैसे तुम्हारा हित साधन करेगा ? हां, ऐसा करो प्रातः काल सन्ध्या वन्दन के उपरान्त जब वह 'है कोई याचक ?' की आवाज लगाए, आप उसके पास जाकर उसका सिर मांग लेना। उसके मरते ही आपकी इच्छा अपने आप पूरी हो जाएगी।

अगले दिन बालक ने नागार्जुन के पुकार लगाने पर सामने आकर कहा 'हां, मैं याचक हूं, क्या इच्छित वस्तु दे सकेंगे आचार्य !'

नागार्जुन ने हंसते हुए राज कुमार का स्वागत किया और यह विचार कर कि बालक मिठाई या खिलौनों के अतिरिक्त और क्या मांग सकता है ? कहा हाँ, हाँ, क्यों नहीं। जो चाहो मांग लो तुम्हारी इच्छा अवश्य पूरी होगी। बालक ने यह सुनते ही कहा—'आचार्य बुरा न मान, मुझे आपका सिर चाहिए।"

नागार्जुन यह सुनते ही स्तब्ध हो गये परन्तु क्योंकि वचन ने चुके थे अतः गदन झुका कर बोले—राज कुमार ! लो उतार लो सिर। राज कुमार ने तलवार के कई प्रहार किये परन्तु गदन धड़ से अलग होना तो दूर उस पर निशान तक नहीं पड़ा। राज कुमार हताश होकर रोने लगा।

नागार्जुन ने अब उसे पुचकार कर पूछा कि वह किसलिये उनका सिर उतारना चाहता है। बालक ने बताया कि—"जब तक आप जीवित रहेंगे तब तक मेरे पिता भी जीवित रहेंगे और उनके जीवित रहते मैं कभी राजा नहीं बन सकूँगा।"

नागार्जुन यह सुनते ही स्तब्ध रह गये। वे समझ गए मर्त्य की सार्थकता तथा संसार नाम की सार्थकता गतिशीलता में ही है स्थिरता में नहीं यह विचार आते ही वे राजा के पास पहुँचे और कहा महाराज आज अपने बचपन और यौवन के साथियों में से कोई भी शेष नहीं बचा है। संसार नवीनता चाहता है अतः मैं अब तपस्या कर अपने अन्त को सुधारना चाहता हूँ। राजा ने उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की परन्तु जब वे नहीं रुके तो उसने भी जीवन का मोह त्याग कर उनका अनुसरण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किया और भगवान् आशुतोष को तपस्या द्वारा प्रसन्न कर मोक्ष का वरदान पा देह त्याग किया।

कालान्तर में नागार्जुन कोण्डा अपने वैभव से ही होकर काल कवलित हो गया। शताब्दियों के पश्चात् इस स्थान पर खुदाई की गई और अवशेषों को निकाल कर संसार के सामने प्रस्तुत किया गया।

आज कृष्णा के जल को रोक कर एक बृहद् जलाशय बनाया गया है। ऊपर बहुत सुन्दर प्राकृतिक दृश्य प्रस्तुत किया गया है। नागार्जुन कोण्डा के ध्वंसावशेषों के दर्शनार्थ इस जलाशय को लांच द्वारा पार कर जाना पड़ता है। वहाँ पहुँच कर जिस विभूति के दर्शन दर्शक को होते हैं वह उसे कल्पना लोक में अनायास पहुँचा कर भारत के दिव्य वैभव का स्मरण कराती है और इस सूक्ति को अन्वर्थक बना देती है—"धन्यास्तु ते भारत भूमि भागे।" ※

आवश्यक सूचना

पाठकों को सहर्ष सूचित किया जाता है कि 'सरिता के कुतर्कों का उत्तर' स्तम्भ के लेखों का पुस्तक रूप में प्रकाशन किया जा रहा है। प्रकाशन में कम से कम १०१) रुपये सहयोग देने वाले महानुभावों का पुस्तक में विधिवत् धन्यवाद सहित नाम प्रकाशित किया जायेगा। —सम्पादक

(२२ पृष्ठ का शेषांश)

दिशा में आचरण भी सम्भव है तीनों कार्यों का समन्वय केवल सिपाही या संन्यासी नहीं कर सकता। उसके लिए सच्चे सुसंस्कृत देशभक्त नागरिक की भूमिका चाहिए।

उदात्त ध्येय की ओर

यह कार्य निःस्वार्थ लोगों द्वारा ही होना सम्भव है। केवल शक्ति उत्पन्न करने का प्रयोजन ही पर्याप्त नहीं है। शक्ति तो अन्य लोग भी उत्पन्न कर सकते हैं। समाज को एक उदात्त ध्येय की ओर ले जाना है। अपने निजी जीवन में आचरण, उदाहरण, चरित्र और सेवा के द्वारा ही यह कार्य किया जा सकता है। इससे धीरे-धीरे अपने आप समाज-पुरुष का निर्माण हो जायेगा और यह राष्ट्र-पुरुष खड़ा हो जायेगा। तभी यह सत्त्व युक्त आत्यन्तिक वैभव का उपभोग निःस्वार्थ और अनासक्त भाव से करने वाला, दुनिया को सही मार्ग पर लाने के प्रचण्ड सामर्थ्य से सम्पन्न क्रियाशील और सक्षम हिन्दु समाज विश्व की समस्त समस्याओं का समाधान कर सकेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शरीर तत्त्व विवेचन

आयुर्वेद मार्तण्ड श्री पं० रामस्वरूप जी शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य

(गतांक से आगे)

अङ्क परिभाषा

अब अङ्कों की परिभाषा की ओर ध्यान दीजिये। इन अंकों द्वारा ही संसार का व्यवहार व्यवस्थित रहता है।

१. अङ्क विशुद्ध ब्रह्म·····(वात)
२. प्रकृति·····(पित्त)
३. वात, पित्त, कफ·····(कफ)
४. रक्त·····(ससार)
५. पंचमहाभूत·····
६. षट्रस (मधुर, अम्ल, लवण कटु, तिक्त, कषाय)
७. सप्तरश्मि ज्योति (आग्नेय तत्त्व)
८. अष्टवसु
९. पूर्णाङ्क आत्मा, नवरत्नात्मक नवग्रहात्मक।
०. शून्य—वात, ब्रह्मात्मिकाशक्तिः।

संसार में नौ से अधिक कोई अङ्क नहीं। सम्पूर्ण अंकगणित तथा यह संसार ९ अकों में ही विभक्त है। अतः इस शरीर को भी नव अङ्कों में ही विभक्त किया गया है। ० शून्य चिन्मय होने से सबके साथ समावेश पाता है। इसी शून्य के आधार पर अनन्त संख्या ज्ञान प्राप्त करते है। जंसे—९ अङ्क के बाद केवल शून्य रहता है। इसी शून्य के आधार पर फिर उन्हीं अङ्कों को पुनरावृत्ति करने लगते हैं। पुनरावृत्ति में १ का स्थान पहले होने से १ ही आया और उसके सामने ० रख दिया तो १० संख्या बन गई, बस इसी क्रम से ११-१२-१३ आदि संख्याए बनी फिर ९ समाप्त होते ही वही क्रम आया और-२ के सामने ० रख दिया तो २० संख्या बन गई। इसी आधार पर २१-२२ आदि संख्याए बनीं।

इसी क्रम से अङ्कगणित का प्रादुर्भाव हुआ। जो अनन्त संख्या का द्योतक बना। वास्तव में अङ्क आपके ९ ही रहे इसी प्रकार चिन्मय पुरुष एक होते हुए भी वेद वाक्य के आधार पर 'एकोऽहं बहु स्याम" मैं एक होते हुए भी अनेक हो जाऊं, इस संकल्प से अनेकधा विभक्त हुआ। (क्रमश)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरिता के कुतर्कों का उत्तर

श्री पं० रामचन्द्र जी शास्त्री, रामायणी

(गतांक से आगे)

नारद द्वारा दो शिवगणों को शाप देने में भी कोई हैरानी की बात नहीं है। प्रेमी जो ने स्वयं माना है कि, उस समय नारद जी बड़ी मानसिक परेशानी में थे। तो ऐसी स्थिति में क्रोध के वश में हो जाना स्वाभाविक है। कोप की परिस्थिति में उन का उपहास करना तो क्रोधाग्नि को अधिक भड़काने के लिये घृताहुति के समान हो माना जाएगा। प्रचण्ड कोप में शाप देने के सिवाय और रास्ता ही क्या था? देखि दसा हरगन मुसुकाहीं। तब हरगन बोले मुसुकाई। निज मुख मुकुर विलोकहु जाई। (१३४।१,३) इस उपहास पर प्रेमी जो का ध्यान क्यों नहीं गया? १—माया विवस भए मुनिमूढ़ा। शिवगणों को शाप देने में एक कारण बना नारद का विष्णु माया से विमूढ़ हो जाना। २—इसमें शिवगणों का कुछ अपना दोष भी था। नारद जो को शीशा देखने की सलाह देने में देवर्षि जो को परेशानी दूर नहीं हुई। इस पर तो उनका क्रोध और भी अधिक बढ़ गया। मनुष्य अपने मुख को शीशे में सहर्ष देखता है। यदि उसे कोई अन्य कह दे कि, जरा अपना चेहरा तो दर्पण में देखो। तब यह बात अखरती है और इस पर गुस्सा आता है तथा इसमें अपमान का अनुभव होता है। वे दोनों शिवगण उस स्वयवर में अपना ब्याह रचाने नहीं आये थे। उन्हें मालूम था कि, नारद ने हमारे स्वामी शंकर जी का उपदेश नहीं माना।

सम्भु दीन्ह उपदेस हित नहिं नारदहि सोहान—१।१२७। अतः भगवान् की माया नारद की दुर्दशा करेगी। तब हम उसकी हंसी उड़ावेंगे। किसी को दुर्दशा पर हंसी उड़ाना सो राक्षसी वृत्ति है। अतः नारद द्वारा राक्षस हो जाने का उन्हें शाप प्राप्त हुआ। किसी को व्यथित, अपमानित तथा पतित देख कर हर्षित होना एवं उसका उपहास करना राक्षसत्व ही तो है। शिवगणों ने नारद जी का उपकार नहीं किया, उपहास ही किया था।

नारद जी स्वयंवर में जाने से पूर्व शीशा तो तब देखते, जब प्रभु द्वारा सौन्दर्य प्राप्त होने में उन्हें कुछ सन्देह होता। उन्हें तो उस समय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपना सारा शरीर विष्णु भगवान् के समान सुन्दर दिखाई दे रहा था। श्रीमन्नारायण ने नारद को जो रूप दिया था, उसका रहस्य प्रेमी जी की समझ में नहीं आया। एक ही समय में नारद को अपना रूप परम सुन्दर दीखने लगा। विश्वमोहिनी राजकुमारी और उन दो शिवगणों को उन का रूप कपि वाला दीख रहा था। बाकी, सब को नारद जी का सदा जैसा रूप था, वैसा दिखाई दे रहा था। (मुनि मन हरष रूप अति मोरे। १।१३२,३। नारद जानि सबहि सिर नावा।१।१३२।४। शिवगण, नीकि दीन्हि हरि (विष्णु-बन्दर) सुन्दरताई।१।१३३।२। सो सरूप नृप कन्या देखा। मर्कट बदन भयंकर देही। देखत हृदय क्रोध भा तेही॥ १।१३३।४।)।

अतः प्रेमी जी का यह लिखना कि, शीशे के बिना नारद अपना बन्दर जैसा मुंह नहीं—देख सके तो कोई बात नहीं। पर वे अपने हाथ, पैरों को तो देख लेते, अज्ञान मूलक है। उन्होंने तो अपने हाथ और पैर विष्णु जी के हाथ-पैरों की तरह सुन्दर रूप में देखे थे, परन्तु प्रेमी जी इस प्रकरण को ठीक तरह से नहीं देख पाए।

शिव गणों ने शीशा देखने की सलाह उन का उपहास करने के लिये दी थी। नारद जी के पास न कोई झोला था न शीशा। यदि किसी अन्य से शीशा मांगते तो वह भी उपहास उड़ाता। जब कि, बिना शीशे के भी प्रेमी जी उपहास कर रहे हैं। अत एव एकान्त में नारद जी ने जल के भीतर अपना रूप देखा, तो उन्हें अब अपना असली रूप दिखाई दिया।

(क्रमशः)

जो अंक न पहुँचे उसे कृपया मंगा लिया करें

प्रतिमास १० तारीख को यथा सम्भव पूरी सावधानी से और जांच करके, पाठकों को 'लोकालोक' के अङ्क भेजे जाते हैं, तथापि अनेक पाठकों को वे नहीं पहुंचते हैं। ऐसी स्थिति में प्रतीक्षारत पाठकों को क्षोभ होना स्वाभाविक है। उपाय यही है कि साधारणतया किसी मास का अङ्क यदि उस मास की २५ तारीख तक न पहुंचे तो एक पोस्टकार्ड लिख कर उसे पुनः मंगा लिया जाय। कार्यालय से भेजे जाने से डाकिये द्वारा पाठक को देने तक के बीच में अङ्क गुम हो जाने पर 'माधव पुस्तकालय' को कोसना और (वैकुण्ठवासी) श्री शास्त्रार्थमहारथी जी के जमाने को याद करना व्यावहारिक, मनोवैज्ञानिक तथा नैतिक नहीं है। (सम्पादक)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

-0. In Public Domain. Digi... by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr...

हमारा मननीय-साहित्य

अथर्ववेद संहिता (मूल) हिन्दी भाष्य)	६०.००	ब्रह्मापुत्री	१.००
अथर्व वेद भाग-१	५०.००	पुराणों के परब्रह्म कृष्ण	२.००
,, निभाग-२	५०.००	शास्त्रार्थ-महारथी	५.००
,, भाग-३	५०.००	सार्वभौम हिन्दू	१०.००
,, भाग-४	५०.००	काशी-शास्त्रार्थ	४.००
यजुर्वेद भाग-१	४०-००	शंका समाधनांक	५.००
,, भाग २	४०-००	शास्त्रार्थ पचक	५.००
वेद दिग्दर्शन	१२.००	चार शास्त्रार्थ	५.००
सनातन संस्कारविधि	१६.००	लबड़ धौं धौं	२.००
वेदामृत	७.००	आँख का शहतीर	१.००
अन्त्येष्टि संस्कार विधि	५.००	परतत्त्व समीक्षा	२.००
संध्या-तर्पण-नित्यकर्म विधि	२.००	शल्यो जेष्यति पाण्डवान्	२.००
क्यों (पूर्वार्द्ध)	२५ ००	पराजय पंचक	.५०
क्यों (उत्तरार्द्ध)	३०.००	सत्यार्थ प्रकाश की छीछालेदर	.५०
सनातन धर्म	५.००	शास्त्रार्थ राज घनवार	.५०
शिखासूत्र	२ ००	दृष्टान्त दिग्दर्शन	२०.००
हमारे पर्व-त्यौहार	३ ००	मन्त्रालोक	४.००
श्रीगणेश	२.००	प्रेरक कथाएँ	५.००
श्राद्धविज्ञान	५.५०	विविध-रामायण	५.००
मूर्तिपूजा विज्ञान	५ ००	मर्यादा पुरुषोत्तम राम	५.००
उपासना रहस्य	२.००	गृहलक्ष्मी	२.००
विवाह विज्ञान	२.००	कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्	१.००
ॐकार शिवलिङ्ग	२ ००	गंगा-लहरी	१.००
हिन्दू और हिन्दूराष्ट्र	५ ००	अमृत-लहरी	१.००
पुराण दिग्दर्शन	२०.००	धर्म शिक्षा भाग-२	१ ००
पुराणदिग्दर्शन (परिशिष्ट)	२ ००	लोकालोक (मासिक पत्र)	
राधाकृष्ण	२ ००	वार्षिक मूल्य-	१५.००
रासलीला	२·००	पुस्तक विक्रेताओं को उचित सुविधाएँ	
चारहरगा	१ ५०	प्रदान की जाती है।	

माधव पुस्तकालय
१०३ ए, कमला नगर दिल्ली-११०००७

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

LOKALOK [illegible] 1984 No. D(DN) [illegible]

अरे सनातन धर्म दिग्विजय मंडल के तत्वावधान में

हमारी धार्मिक सेवायें

- अपने धार्मिक उत्सवों को सफल बनाने के लिए सनातन धर्म के वैज्ञानिक प्रवचनों के लिए उच्चकोटि के महोपदेशक एवं भजनोपदेशक मंगवाइये।
- [illegible] प्रकार के [illegible] यज्ञ, श्रीमद्भागवत, हरिवंशपुराण, शिवपुराण आदि [illegible] पाराहण तथा अनुष्ठान सम्पन्न कराने के लिए सुयोग्य [illegible] आचार्य और कर्मकाण्डी वेदपाठियों के निमित्त [illegible] करें।
- धार्मिक [illegible] एवं राष्ट्रीय कर्त्तव्य जानने के लिए हमारा 'लोकालोक' मासिक पत्र पढ़िये। वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति १.५० पैसे।
- सनातन धर्म का वैज्ञानिक रहस्य जानने के लिए हमारा उपादेय गमनीय साहित्य पढ़िये।

माधव पुस्तकालय

103 ए० कमला नगर दिल्ली

[illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh